17 जून 2011, कुल पृष्ठ : 8, मूल्य : 2/- आर. एन. आई. 31109/77 RJ / J. P. C / FN-61 / 2009-11

जैन
# पथप्रदर्शक

ए-4, बापूनगर, जयपुर - 302015 (राज.)

नैतिक एवं सामाजिक चेतना का अग्रदूत निष्पक्ष पाक्षिक

डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल के व्याख्यान देखिये

जी-जागरण पर
प्रतिदिन प्रातः
6.40 से 7.00 बजे तक

वर्ष : 34, अंक : 6 सम्पादक : **पण्डित रतनचन्द भारिल्ल** आजीवन शुल्क : 251 रुपये

जून (द्वितीय), 2011 (वीर नि. संवत्-2537) सह-सम्पादक : **पण्डित संजीवकुमार गोधा** वार्षिक शुल्क : 25 रुपये

## बाल संस्कार शिविरों की धूम

**मई व जून माह में पूरे देश में बाल संस्कार शिविरों के माध्यम से अभूतपूर्व तत्त्वप्रचार हुआ। यहाँ ग्वालियर, रत्नागिरि, द्रोणगिरि एवं दिल्ली में लगाए गए बाल संस्कार शिविर के संक्षिप्त समाचार यहाँ प्रकाशित किये जा रहे हैं। इनके अतिरिक्त अनेक स्थानों पर ग्रुप शिविरों का आयोजन हो रहा है, जिसके समाचार आगामी अंक में प्रकाशित किये जायेंगे। इन शिविरों में हजारों बालक-बालिकाओं में जैनत्व के संस्कारों का बीजारोपण किया। बालकों के अतिरिक्त हजारों साधर्मियों ने ज्ञान गंगा में स्नान किया।**

**1. ग्वालियर (म.प्र.) :** यहाँ जैन स्वर्ण मंदिर में जैन नैतिक शिक्षण समिति द्वारा दिनांक 24 अप्रैल से 4 मई तक बाल संस्कार शिविर का आयोजन किया गया।

इस शिविर में पण्डित विकासजी शास्त्री खनियांधाना, पण्डित अभयजी शास्त्री खड़ैरी, पण्डित शुद्धात्मप्रकाशजी शास्त्री मौ, पण्डित पवनजी शास्त्री मौ, पण्डित अक्षयजी मंगलार्थी, पण्डित चिद्रूपजी मंगलार्थी, पण्डित रिंकेशजी मंगलार्थी द्वारा शिक्षण कक्षायें चलाई गई।

शिविर में लगभग 350 बालकों ने जैनत्व के संस्कार ग्रहण किये।

**2. साडवली-रत्नागिरि (महा.) :** यहाँ श्री जैनोन्नति स्वाध्याय मंडल के तत्त्वावधान में दिनांक 26 से 31 मई तक बाल संस्कार शिविर का आयोजन किया गया।

इस अवसर पर प्रतिदिन दोनों समय पण्डित जितेन्द्रकुमारजी राठी, पुणे द्वारा रत्नकरण्ड श्रावकाचार पर एवं दोपहर में श्रीमती सुधाताई चिवटे, बेलगांव द्वारा प्रवचनों का लाभ मिला।

शिविर में प्रातः प्रभातफेरी एवं जिनेन्द्र पूजन के पश्चात् प्रतिदिन बालकों की तीनों समय धार्मिक कक्षायें संपन्न हुई, जिसमें बालबोध पाठमाला भाग 2 की कक्षा पण्डित जितेन्द्रकुमारजी राठी द्वारा एवं बालबोध पाठमाला भाग 1 की कक्षा कु.अक्षदा मोहिरे व कु.कृतिका मोहिरे द्वारा ली गई।

अन्तिम दिन परीक्षा लेकर सभी उत्तीर्ण विद्यार्थियों को पुरस्कार वितरित किये गये। शिविर में श्री अशोकजी मोहिरे, श्री अजितजी मोहिरे एवं प्रज्ञा मोहिरे का सहयोग प्राप्त हुआ। **- माधुरी वनकुद्रे**

**(शेष पृष्ठ 4 पर...)**

**टोडरमल स्मारक के पंचकल्याणक हेतु -**

## बुकिंग शीघ्र करावें

जैनपथप्रदर्शक के पिछले (जून-प्रथम) अंक में टोडरमल स्मारक ट्रस्ट के प्रतिष्ठा महोत्सव हेतु आमंत्रण एवं पात्रों की बुकिंग की सूचि छापी गयी थी; एतदर्थ लोगों द्वारा फोनों/पत्रों/ई-मेल द्वारा बुकिंग करने का सिलसिला प्रारंभ हो गया है। चूंकि सभी बुकिंग पहले आयो पहले पाओ के आधार पर हो रही है; अत: यदि आपने अभी तक एतदर्थ बुकिंग न कराई हो तो कृपया शीघ्रता करें।

आप अपनी स्वीकृति निम्न स्वीकृति-पत्र पर भरकर भेज सकते हैं।

### स्वीकृति पत्र

मैं पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट द्वारा आयोजित पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव के अवसर पर ह्न

1.....

2.....

3.....

के लिए .....राशि दान स्वरूप प्रदान करने की स्वीकृति प्रदान करता हूँ।

हस्ताक्षर दानदाता

_____

पता .....

.....

फोन नं. ..... मोबाईल .....

ईमेल .....

### जन्माभिषेक के कलशों का विवरण

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| **1.** | परमेष्ठी कलश | चर्चा द्वारा | **6.** | रत्नत्रय कलश | 21 हजार |
| **2.** | कुन्दकुन्द कलश | चर्चा द्वारा | **7.** | रत्न कलश | 11 हजार |
| **3.** | अमृतचंद कलश | 5 लाख | **8.** | स्वर्ण कलश | 5100 |
| **4.** | टोडरमल कलश | 1 लाख | **9.** | रजत कलश | 2100 |
| **5.** | पंचरत्न कलश | 51 हजार | **10.** | ताम्र कलश | 1100 |

सम्पादकीय – 58

# पंचास्तिकाय : अनुशीलन

– पण्डित रतनचन्द भारिल्ल

## गाथा– ८९

पिछली गाथा में धर्मद्रव्य एवं अधर्मद्रव्य को मात्र उदासीन निमित्त निरूपित किया गया है।

अब प्रस्तुत गाथा में धर्म और अधर्मद्रव्य की उदासीनता के सम्बन्ध हेतु कहा जा रहा है। मूल गाथा इसप्रकार है –

**विज्जदि जेसिं गमणं ठाण पुण तेसिमेव संभवदि।**
**ते सगपरिणामेहिं दु गमणं ठाणं च कुव्वंति।।८९।।**

(हरिगीत)

**जिनका होता गमन है, होता उन्हीं का ठहरना।**
**तो सिद्ध होता है कि द्रव्य, चलते–ठहरते स्वयं से।।८९।।**

जिन द्रव्यों की गति होती है, उन्हीं की फिर स्थिति होती है तथा वे सभी जीव व पुद्गल अपने परिणामों से गति व स्थिति करते हैं।

इसके स्पष्टीकरण में आचार्य अमृतचन्द्रदेव कहते हैं कि वास्तव में अर्थात् निश्चय से धर्मद्रव्य जीव और पुद्गलों को कभी गति में हेतु नहीं होता। अधर्मद्रव्य भी कभी स्थिति में मुख्य हेतु नहीं होता। यदि वह हेतु हो तो जिन्हें गति हो उन्हें गतिशील ही रहना चाहिए, उनकी स्थिति नहीं होनी चाहिए और जिन्हें स्थिति हो, उन्हें स्थिति ही रहनी चाहिए; किन्तु एक पदार्थ को ही गति व स्थिति – दोनों देखने में आते हैं, इसलिए कह सकते हैं कि धर्म द्रव्य व अधर्म द्रव्य मुख्य हेतु नहीं हैं; किन्तु जब जीव व पुद्गल अपनी तत्समय की योग्यता से गमन करें या स्थित रहें तब धर्म द्रव्य व अधर्म द्रव्य गति एवं स्थिति में निमित्त मात्र होते हैं। इसलिए उन्हें व्यवहारनय से उदासीन कारण कहा जाता है।

कवि हीरानन्दजी अपनी काव्य की भाषा में कहते हैं –

( सवैया इकतीसा )

**धरमाधरम दौनौ जौ तौ गति–थिति हेतु,**
**मुख्यरूपरूप लसै तौ तौ बड़ाई विरोध है।**
**गति कौं करैया सदाकाल गति ही कौं करै,**
**तिथि का करैया थिति ऐसा तौ न बोध है।।**
**तातैं चले और रहे जीव अनुनाना ठौर,**
**आपैं उपादान सैती निहचै कौं सोध है।**
**बाहिर निमित्त धर्मा–धर्म उदासीरूप,**
**ऐसौं भेद वानी ही तैं ग्यानी के प्रबोध हैं।।३९७।।**

प्रस्तुत छन्दों में यह कहा है कि धर्म व अधर्म दोनों जीवों और पुद्गलों को चलाते व ठहराते नहीं है; बल्कि जब जीव व पुद्गल अपनी योग्यता से गमन करते व ठहरते हैं तो उक्त दोनों द्रव्य मात्र उदासीन निमित्त होते हैं।

इसी विषय को स्पष्ट करते हुए गुरुदेव श्री कानजीस्वामी आचार्य जयसेन के तर्क के आधार पर कहते हैं कि धर्मद्रव्य व अधर्मद्रव्य गति–स्थिति में मुख्य कारण नहीं हैं।

जीव एवं पुद्गल पदार्थ अपने उपादान कारण से चलते एवं ठहरते हैं। कोई अन्य उन्हें प्रेरणा करके चलाता व ठहराता नहीं है। इसलिये यह तय है कि धर्म व अधर्म द्रव्य गति–स्थिति में मुख्य कारण नहीं है। व्यवहारनय से उन्हें उदासीन निमित्त कारण कहा जाता है। सर्वज्ञ के मत के सिवाय यह धर्म–अधर्म की चर्चा अन्यमत में कहीं नहीं है। यहाँ तीन बातों को ध्यान रखना है –

१. आत्मा शक्तिरूप से सर्वज्ञ है। २. जगत में छह द्रव्य परिपूर्ण हैं। ३. अपने ज्ञानस्वभाव की ओर ढलकर अपने में जो ज्ञान प्रकट होता है, उसकी ताकत बहुत है। वह ज्ञान स्व को जानता हुआ छह द्रव्यों को यथार्थ जानता है।''

तात्पर्य यह है कि प्रत्येक पदार्थ अपने कारण गति व स्थितिरूप पर्याय स्वतंत्र रूप से करता है ऐसी अनंतपर्यायों को धारण करनेवाला प्रत्येक गुणस्वतंत्र है तथा उन गुणों को धारण करने वाले द्रव्य भी स्वतंत्र हैं। ●

## गाथा– ९०

विगत गाथा में बताया गया है जीवों एवं पुद्गलों की गति एवं स्थिति तो उनकी अपनी तत्समय योग्यता रूप उपादान कारण से होती है, धर्म व अधर्म द्रव्य तो निमित्त मात्र होते हैं।

अब गाथा ९० से आकाश द्रव्यास्तिकाय का वर्णन करते हैं। मूल गाथा इसप्रकार है –

**सव्वेसिं जीवाणं सेसाणं तह य पोग्गलाणं च।**
**जं देदि विवरमखिलं तं लोगे हवदि आगासं।।९०।।**

(हरिगीत)

**जीव पुद्गल धरम आदिक लोक में जो द्रव्य हैं।**
**अवकाश देता इन्हें जो आकास नामक द्रव्य वह।।९०।।**

लोक में जीवों, पुद्गलों तथा शेष समस्त द्रव्यों को जो सम्पूर्ण अवकाश देता है, वह आकाश द्रव्य है।

आचार्य अमृतचन्द्रदेव अपनी टीका में कहते हैं कि यह आकाश द्रव्य के स्वरूप का कथन है। षट्द्रव्यात्मक लोक में शेष सभी द्रव्यों को अर्थात् अनंतानंत जीव, उनसे भी अनन्तगुणे पुद्गल, असंख्य कालाणु और असंख्यप्रदेशी एक धर्म द्रव्य, एक अधर्मद्रव्य को जो अवकाश दे, वह आकाश द्रव्य है। ये सब लोक से अनन्य हैं। आकाश द्रव्य अनन्त

होने के कारण लोक से अनन्य एवं अन्य है।

कवि हीरानन्दजी अपनी काव्य की भाषा में कहते हैं कि -

( सवैया इकतीसा )

**लोकविषैं जहाँ-जहाँ जीव पुद्गल समूह,**
**धर्माधर्म काल व्योम सबका निवास है।**
**सब ही कौं सदा काल एक खेत विषैं ढाल,**
**अवकास व्योम देय कारण विलास है।।**
**सुद्ध परदेस खेत सबका सहेत गुन,**
**परजैसमेत सदा सुद्धता प्रकास है।**
**हलन-चलन वर्ती क्रिया जामें कवै नाहिं,**
**सुद्ध अवकास क्रिया जामैं सो अकास है।।४०१।।**

( दोहा )

**पुग्गलकाया जीव फुनि, धरमाधरम अनन्य।**
**तिनतैं अन्य अनन्य है, नभ अनंत अनगन्य।।४०३।।**

लोक में जहाँ-जहाँ जीवों व पुद्गलों का समूह है, धर्मद्रव्य, अधर्म द्रव्य, आकाशद्रव्य एवं कालद्रव्य का निवास है, उसे लोकाकाश जानो। ये सभी द्रव्य अपने-अपने गुण पर्यायों सहित रहते हैं, आकाश में स्वयं हलन-चलन क्रिया नहीं है; किन्तु जितने भाग में छह द्रव्य हैं, वह लोकाकाश, शेष भाग अलोकाकाश है।

इसी भाव को विशेष स्पष्टीकरण के साथ गुरुदेव श्री कानजीस्वामी कहते हैं कि आकाश अनन्त प्रदेशी है, इसलिए कायवान होने से यह अस्तिकाय है। यद्यपि आकाश को यह खबर नहीं है कि मैं अनन्त जीवों तथा अनन्तानंत पुद्गल आदि छहों द्रव्यों को अवकाश देता हूँ; क्योंकि वह जड़ है, फिर भी अपनी स्वभावगत योग्यता से वह सब द्रव्यों को अवकाश देता है।

यदि समस्त लोक सूक्ष्म परिणमन करे तो आकाश अपने एक प्रदेश में अवकाश दे सकता है - ऐसी योग्यता आकाश द्रव्य में है।

इसप्रकार इस गाथा में द्रव्य का सामान्य वर्णन हुआ। ●

## ग्रीष्मकालीन परीक्षायें 20 अगस्त 2011 से

श्री वीतराग-विज्ञान विद्यापीठ परीक्षा बोर्ड, ए-4, बापूनगर, जयपुर की ग्रीष्मकालीन परीक्षायें 20, 21 व 22 अगस्त 2011 को होना निश्चित किया गया है।

- संबंधित सभी परीक्षा केन्द्रों को खाली छात्र प्रवेश-फार्म भेज दिए गए हैं। कृपया भरकर भिजवा देवें।

-जिन केन्द्रों को डाक की गड़बड़ी से अभी तक भी प्रवेश फार्म नहीं मिले हों, कृपया वे पोस्टकार्ड लिखकर तुरन्त मंगवा लेवें।

- विस्तृत परीक्षा कार्यक्रम प्रकाशित कर दिया गया है।

**- ओ.पी.आचार्य (प्रबंधक)**

## श्री वीतराग-विज्ञान विद्यापीठ परीक्षा बोर्ड
## श्री टोडरमल स्मारक भवन

ए-4, बापूनगर, जयपुर - 302015 (राजस्थान)

### ग्रीष्मकालीन परीक्षा कार्यक्रम सत्र-2011

| दिन व दिनांक | नाम ग्रन्थ |
|---|---|
| शनिवार 20 अगस्त 2011 | 1. बालबोध पाठमाला भाग-1 (बा.प्रथम खण्ड) मौखिक<br>2. जैन बालपोथी भाग-1 (मौखिक)<br>3. वीतराग-विज्ञान पाठमाला भाग-1(प्रवेशिका प्रथम खण्ड)<br>4. तत्त्वज्ञान पाठमाला भाग-1<br>5. छहढाला (पूर्ण)<br>6. तत्त्वार्थसूत्र (मोक्षशास्त्र) पूर्वार्द्ध<br>7. मोक्षमार्गप्रकाशक (पूर्वार्द्ध)<br>8. जैन सिद्धान्त प्रवेशिका (गोपालदासजी बरैया कृत)<br>9. विशारद प्रथम खण्ड (प्रथम वर्ष) |
| रविवार 21 अगस्त 2011 | 1. बालबोध पाठमाला भाग-2 (बा.द्वितीय खण्ड) मौखिक<br>2. जैन बालपोथी भाग-2 (मौखिक)<br>3. वीतराग-विज्ञान पाठमाला भाग 2(प्रवेशिका द्वितीयखण्ड)<br>4. तत्त्वज्ञान पाठमाला भाग-2<br>5. द्रव्यसंग्रह (पूर्ण)<br>6. तत्त्वार्थसूत्र (मोक्षशास्त्र) उत्तरार्द्ध<br>7. लघु जैनसिद्धान्त प्रवेशिका (सोनगढ़)<br>8. मोक्षमार्गप्रकाशक (उत्तरार्द्ध)<br>9. विशारद प्रथम खण्ड (द्वितीय वर्ष)<br>10. विशारद द्वितीय खण्ड (प्रथम वर्ष) |
| सोमवार 22 अगस्त 2011 | 1. बालबोध पाठमाला भाग-3 (बा.तृतीय खण्ड) मौखिक<br>2. वीतराग-विज्ञान पाठमाला भाग-3 (प्रवेशिका तृतीय खण्ड)<br>3. रत्नकरण्डश्रावकाचार (पूर्ण)<br>4. पुरुषार्थसिद्ध्युपाय (पूर्ण)<br>5. विशारद द्वितीय खण्ड (द्वितीय वर्ष) |

**नोट -** (1) सुविधानुसार परीक्षा का समय सुबह 9 बजे से शाम 5 बजे तक के बीच में कभी भी सैट किया जा सकता है।

(2) जहाँ एक से अधिक केन्द्र हों, वे आपस में मिलकर समय निश्चित करें।

(3) यदि किन्हीं विषयों के छात्र आपस में टकराते हों तो परीक्षा सुविधानुसार दिन में दो बार ली जा सकती है।

(4) बालबोध पाठमाला भाग 1, 2, 3 और जैन बालपोथी भाग 1 व 2 की परीक्षायें मौखिक लेवें। शेष सभी विषयों की परीक्षायें लिखित में लेवें।

-

# श्रुतपंचमी पर्व मनाया

**1. जयपुर (राज.) :** यहाँ ज्ञानतीर्थ श्री टोडरमल स्मारक भवन में दिनांक 6 जून को श्रुतपंचमी पर्व मनाया गया।

इस अवसर पर प्रात: 8 बजे जिनवाणी की विशेष पूजन षट्खण्डागम, धवला आदि आगम ग्रंथों एवं समयसारादि परमागम ग्रन्थों को उच्चासन पर विराजमान करके की गई। तत्पश्चात् पण्डित रतनचंदजी भारिल्ल द्वारा श्रुतपंचमी विषय पर विशेष व्याख्यान हुआ। उन्होंने अपने व्याख्यान में कहा कि इस पंचमकाल में सर्वोकृष्ट पर्व श्रुतपंचमी पर्व है। धन्य हैं वे धरसेनाचार्य, जिन्हें हम सभी पर करुणा बुद्धि से जिनवाणी को लिपिबद्ध कराने का भाव आया। उनके प्रताप से ही आज हम जिनवाणी का अध्ययन-मनन कर पा रहे हैं।

संपूर्ण कार्यक्रम पण्डित शान्तिकुमारजी पाटील के निर्देशन में पण्डित संजयजी शास्त्री व पण्डित सचिन्द्रजी शास्त्री के सहयोग से संपन्न हुआ।

ज्ञातव्य है कि श्री दि.जैन तेरहपंथी बड़ा मन्दिर, घी वालों के रास्ते में पण्डित संजीवकुमारजी गोधा द्वारा श्रुतपंचमी के अवसर पर विशेष प्रवचन का लाभ मिला।

**2. जयपुर (राज.) :** यहाँ राजस्थान जैन साहित्य परिषद् की ओर से श्रुतपंचमी के अवसर पर दिनांक 4 से 6 जून तक तीन दिवसीय कार्यक्रम आयोजित किया गया।

इस अवसर पर दिनांक 4 जून को **जैन दर्शन में अहिंसा** विषय पर एक संगोष्ठी का आयोजन किया गया, जिसमें डॉ. प्रतिभा जैन (पूर्व निदेशक, गांधी अध्ययन केन्द्र) एवं डॉ. श्रीयांसकुमारजी सिंघई (प्रोफेसर एवं अध्यक्ष - जैनदर्शन विभाग, राष्ट्रीय संस्कृत संस्थान) मुख्य वक्ता थे। गोष्ठी के संयोजक श्री शांतिलालजी गंगवाल थे।

दिनांक 5 जून को एस.एफ.एस, मानसरोवर के श्री आदिनाथ दि.जैन मन्दिर में श्रुत स्कन्ध मण्डल विधान का आयोजन रखा गया। विधान के संयोजक श्री राजेन्द्रकुमार लुहाड़िया एवं रमेश कुमार गंगवाल थे।

दिनांक 6 जून को विशाल जिनवाणी रथ यात्रा निकाली गयी, जो श्री दि.जैन तेरहपंथी बड़ा मन्दिर, घी वालों के रास्ते से श्री दि.जैन मन्दिर संघीजी में पहुंचकर धर्मसभा में परिवर्तित हुई। इस धर्मसभा में श्रुतपंचमी के महत्व पर प्रकाश डाला गया।

**3. खतौली (उ.प्र.) :** यहाँ श्रुतपंचमी महापर्व के अवसर पर दिनांक 4 से 6 जून तक त्रिदिवसीय कार्यक्रम के अन्तर्गत नवलब्धि विधान संपन्न हुआ।

इस अवसर पर पण्डित प्रकाशचंदजी ज्योतिर्विद मैनपुरी के प्रवचनों का लाभ मिला। मंगल कलश की स्थापना श्री प्रवीणकुमारजी जैन परिवार द्वारा हुई एवं ध्वजारोहण श्री नरेन्द्रकुमारजी जैन परिवार द्वारा किया गया।

दिनांक 6 जून को जिनवाणी की विशाल एवं भव्य पालकी शोभायात्रा जिनमंदिर के दर्शन के साथ निकाली गई।

विधि विधान के संपूर्ण कार्य पण्डित अनिलजी शास्त्री 'धवल' भोपाल के निर्देशन में पण्डित ऋषभजी शास्त्री घिरोर व पण्डित वीरेन्द्रजी शास्त्री बकस्वाहा द्वारा संपन्न हुये। **- कल्पेन्द्रकुमार जैन**

**विदाई की बेला की ऑडियो सी.डी. का विमोचन -**

# एक नूतन प्रयोग

**जयपुर (राज.) :** यहाँ श्री टोडरमल स्मारक भवन में दिनांक 29 मई को पण्डित रतनचंदजी भारिल्ल कृत 'विदाई की बेला' को अखिल भारतीय जैन युवा फैडरेशन द्वारा ऑडियो बुक के रूप में प्रस्तुत किया गया।

इस ऑडियो बुक की सी.डी. का उद्घाटन श्री गुलाबचन्दजी कटारिया (पूर्व शिक्षा मंत्री, राजस्थान सरकार) ने किया।

इसमें स्वर टोडरमल महाविद्यालय के स्नातक पण्डित सौरभजी शास्त्री इन्दौर का, परिकल्पना एवं निर्देशन पण्डित गौरवजी शास्त्री इन्दौर द्वारा किया है।

सी.डी. प्राप्त करने हेतु संपर्क करें -

प्रवचन प्रसार-विभाग, श्री टोडरमल स्मारक भवन, ए-4, बापूनगर, जयपुर - 302015 (राज.)

**( पृष्ठ 1 का शेष...)**

**3. सिद्धायतन-द्रोणगिरि (म.प्र.) :** यहाँ श्रुत पंचमी के पावन अवसर पर श्री गुरुदत्त कुन्दकुन्द कहान दिगम्बर जैन स्वाध्याय मन्दिर ट्रस्ट द्वारा दिनांक 5 से 11 जून तक चतुर्थ बाल संस्कार शिविर का आयोजन किया गया।

इस अवसर पर पण्डित राजकुमारजी शास्त्री बांसवाड़ा, पण्डित पीयूषजी शास्त्री जयपुर, पण्डित अरुणजी शास्त्री बड़ामलहरा, पण्डित आत्मप्रकाशजी शास्त्री खड़ैरी, पण्डित दीपेशजी शास्त्री अमरमऊ, पण्डित विवेकजी शास्त्री दलपतपुर, पण्डित विवेकजी शास्त्री मड़देवरा, पण्डित अभिषेकजी शास्त्री मड़देवरा, पण्डित रवीन्द्रजी शास्त्री बकस्वाहा एवं डॉ. ममता जैन बांसवाड़ा के प्रवचनों एवं कक्षाओं का लाभ मिला।

शिविर का ध्वजारोहण इन्जी. सुनीलजी छतरपुर ने किया। विधानकर्त्ता डॉ. बासन्तीबेन शाह परिवार मुम्बई थे।

शिविर में लगभग 300 बच्चों ने धर्मलाभ लिया।

शिविर का संचालन श्री टोडरमल युवा शास्त्री परिषद् से पण्डित पंकजजी शास्त्री खड़ैरी एवं पण्डित रामनरेशजी शास्त्री खड़ैरी ने किया।

**दिल्ली :** यहाँ अखिल भारतीय जैन युवा फैडरेशन शाखा विश्वास नगर द्वारा दिनांक 4 से 12 जून तक ग्रीष्मकालीन बाल संस्कार शिक्षण शिविर का आयोजन किया गया।

शिविर में टोडरमल दि.जैन सिद्धांत महाविद्यालय, श्री आदिनाथ विद्यानिकेतन एवं आत्मार्थी कन्या विद्या निकेतन के विद्यार्थियों का लाभ मिला।

इस अवसर पर दिल्ली के घेवरा मोड़, विश्वास नगर, शिवाजी पार्क, पांडव नगर, अशोका एन्क्लेव पीरागढी, छाछी बिल्डिंग कृष्णानगर, शंकर रोड़ राजेन्द्र नगर, वसंत कुन्ज, बहादुर गढ, रघुबरपुरा, मयूर विहार फेज-1, नोएडा, इन्दिरापुरम, खेकड़ा, पालम गांव, वसुन्धरा एन्क्लेव एवं डिप्टीगंज आदि 19 स्थानों पर 26 विद्वानों के माध्यम से तत्त्वप्रचार हुआ। शिविर में लगभग 1700 साधर्मियों ने धर्मलाभ लिया, जिनमें 1200 बच्चे शामिल थे।

# मंगलायतन विश्वविद्यालय का विज्ञापन

# मोक्षमार्ग प्रकाशक का सार

## 76 बीसवाँ प्रवचन

– डॉ. हुकमचन्द भारिल्ल

**(गतांक से आगे...)**

यदि व्यवहारनय असत्यार्थ है तो जिनागम में उसका निरूपण ही क्यों किया ? इस प्रश्न के उत्तर में जब यह कहा जाता है कि व्यवहार निश्चय का प्रतिपादक है, उसके बिना निश्चय का प्रतिपादन संभव नहीं है; इसलिए उसे जिनागम में स्थान प्राप्त हुआ है; तब सहज ही यह प्रश्न उपस्थित होता है कि व्यवहार के बिना निश्चय का प्रतिपादन क्यों नहीं हो सकता ?

इस प्रश्न का उत्तर देते हुए पण्डित टोडरमलजी लिखते हैं –

**''निश्चय से तो आत्मा परद्रव्यों से भिन्न, स्वभावों से अभिन्न स्वयंसिद्ध वस्तु है; उसे जो नहीं पहिचानते, उनसे इसीप्रकार कहते रहें तब तो वे समझ नहीं पायें। इसलिए उनको व्यवहारनय से शरीरादिक परद्रव्यों की सापेक्षता द्वारा नर-नारक-पृथ्वीकायादिरूप जीव के विशेष किये – तब मनुष्य जीव है, नारकी जीव है, इत्यादि प्रकार सहित उन्हें जीव की पहिचान हुई है।**

**अथवा अभेद वस्तु में भेद उत्पन्न करके ज्ञान-दर्शनादि गुण-पर्यायरूप जीव के विशेष किये, तब जाननेवाला जीव है, देखनेवाला जीव है, इत्यादि प्रकार सहित उनको जीव की पहिचान हुई।**

**तथा निश्चय से वीतरागभाव मोक्षमार्ग है; उसे जो नहीं पहिचानते उनको ऐसे ही कहते रहें तो वे समझ नहीं पायें। तब उनको व्यवहारनय से, तत्त्वश्रद्धान-ज्ञानपूर्वक परद्रव्य के निमित्त मिटने की सापेक्षता द्वारा व्रत, शील, संयमादिरूप वीतरागभाव के विशेष बतलाये; तब उन्हें वीतरागभाव की पहिचान हुई।**

**इसीप्रकार अन्यत्र भी व्यवहार बिना निश्चय के उपदेश का न होना जानना।[१]''**

उक्त कथन का सही भाव न समझ पाने के कारण किसी प्रकार की भूल न हो जावे – इस भावना से सावधान करते हुए पण्डितजी कहते हैं –

**''तथा यहाँ व्यवहार से नर-नारकादि पर्याय को ही जीव कहा, सो पर्याय ही को जीव नहीं मान लेना। पर्याय तो जीव-पुद्गल के संयोगरूप है। वहाँ निश्चय से जीवद्रव्य भिन्न है, उस ही को जीव मानना। जीव के संयोग से शरीरादिक को भी उपचार से जीव कहा, सो कथनमात्र ही है, परमार्थ से शरीरादिक जीव होते नहीं – ऐसा ही श्रद्धान करना।**

**तथा अभेद आत्मा में ज्ञान-दर्शनादि भेद किये, सो उन्हें भेदरूप ही नहीं मान लेना, क्योंकि भेद तो समझाने के अर्थ किये हैं। निश्चय से आत्मा अभेद ही है; उस ही को जीव वस्तु मानना।**

**संज्ञा-संख्यादि से भेद कहे सो कथनमात्र ही हैं; परमार्थ से भिन्न-भिन्न हैं नहीं, ऐसा ही श्रद्धान करना।**

**तथा परद्रव्य का निमित्त मिटने की अपेक्षा से व्रत-शील-संयमादिक को मोक्षमार्ग कहा, सो इन्हीं को मोक्षमार्ग नहीं मान लेना; क्योंकि परद्रव्य का ग्रहण-त्याग आत्मा के हो तो आत्मा परद्रव्य का कर्ता-हर्ता हो जाये। परन्तु कोई द्रव्य किसी द्रव्य के आधीन है नहीं; इसलिए आत्मा अपने भाव रागादिक हैं, उन्हें छोड़कर वीतरागी होता है; इसलिए निश्चय से वीतरागभाव ही मोक्षमार्ग है।**

**वीतरागभावों के और व्रतादिक के कदाचित् कार्य-कारणपना है; इसलिए व्रतादि को मोक्षमार्ग कहे सो कथनमात्र ही हैं; परमार्थ से बाह्यक्रिया मोक्षमार्ग नहीं है – ऐसा ही श्रद्धान करना।**

**इसीप्रकार अन्यत्र भी व्यवहारनय का अंगीकार नहीं करना – ऐसा जान लेना।[१]''**

कुछ लोग कहते हैं कि यदि व्यवहारनय को हेय कहेंगे तो फिर हम व्रत, शील, संयमादि छोड़ देंगे। ऐसे लोगों को समझाते हुए पण्डित टोडरमलजी कहते हैं –

**''कुछ व्रत, शील, संयमादिक का नाम व्यवहार नहीं है; इनको मोक्षमार्ग मानना व्यवहार है, उसे छोड़ दे; और ऐसा श्रद्धान कर कि इनको तो बाह्य सहकारी जानकर उपचार से मोक्षमार्ग कहा है, यह तो परद्रव्याश्रित हैं, तथा सच्चा मोक्षमार्ग वीतरागभाव है, वह स्वद्रव्याश्रित है। इसप्रकार व्यवहार को असत्यार्थ-हेय जानना।**

**व्रतादिक को छोड़ने से तो व्यवहार का हेयपना होता नहीं है।**

**फिर हम पूछते हैं कि व्रतादिक को छोड़कर क्या करेगा ?**

**यदि हिंसादिरूप प्रवर्तेगा तो वहाँ तो मोक्षमार्ग का उपचार भी सम्भव नहीं है; वहाँ प्रवर्तने से क्या भला होगा ? नरकादि प्राप्त करेगा। इसलिए ऐसा करना तो निर्विचारीपना है। तथा व्रतादिकरूप परिणति को मिटाकर केवल वीतराग उदासीनभावरूप होना बने तो अच्छा ही है; वह निचली दशा में हो नहीं सकता; इसलिए व्रतादि साधन छोड़कर स्वच्छन्द होना योग्य नहीं है। इसप्रकार श्रद्धान में निश्चय को, प्रवृत्ति में व्यवहार को उपादेय मानना वह भी मिथ्याभाव ही है।[२]''**

इसप्रकार हम देखते हैं कि निश्चय-व्यवहार मोक्षमार्ग के सही स्वरूप को न समझ पाने के कारण उभयाभासी भी मिथ्यादृष्टि ही हैं।

भगवान आत्मा का सही स्वरूप न जाननेवाले निश्चयाभासी, व्यवहाराभासी और उभयाभासियों के अतिरिक्त कुछ लोग ऐसे भी हैं कि जो वस्तु का सही स्वरूप समझने के लिए प्रयासरत हैं। ऐसे लोगों को पण्डितजी सम्यक्त्व के सन्मुख मिथ्यादृष्टि कहते हैं।

---

१. मोक्षमार्गप्रकाशक, सातवाँ अधिकार, पृष्ठ २५२

१. मोक्षमार्गप्रकाशक, सातवाँ अधिकार, पृष्ठ २५२-५३ २.वही, पृष्ठ २५३-२५४

निश्चयाभासी, व्यवहाराभासी और उभयाभासियों की चर्चा हो जाने के उपरान्त अब सम्यक्त्व के सन्मुख मिथ्यादृष्टियों की चर्चा करते हैं।

उनकी चर्चा आरंभ करते हुए पण्डित टोडरमलजी लिखते हैं –

**''कोई मन्दकषायादि का कारण पाकर ज्ञानावरणादि कर्मों का क्षयोपशम हुआ, जिससे तत्त्वविचार करने की शक्ति हुई; तथा मोह मन्द हुआ, जिससे तत्त्वविचार में उद्यम हुआ और बाह्यनिमित्त देव–गुरु–शास्त्रादिक का हुआ, उनसे सच्चे उपदेश का लाभ हुआ।**

**वहाँ अपने प्रयोजनभूत मोक्षमार्ग के, देव–गुरु–धर्मादिक के, जीवादि तत्त्वों के तथा निज–पर के और अपने को अहितकारी –हितकारी भावों के इत्यादि के उपदेश से सावधान होकर ऐसा विचार किया कि अहो ! मुझे तो इन बातों की खबर ही नहीं, मैं भ्रम से भूलकर प्राप्त पर्याय में ही तन्मय हुआ; परन्तु इस पर्याय की तो थोड़े ही काल की स्थिति है; तथा यहाँ मुझे सर्व निमित्त मिले हैं, इसलिए मुझे इन बातों को बराबर समझना चाहिए; क्योंकि इनमें तो मेरा ही प्रयोजन भासित होता है। ऐसा विचारकर जो उपदेश सुना उसके निर्धार करने का उद्यम किया।[१]''**

सम्यग्दर्शन की प्राप्ति के पहले पाँच लब्धियाँ होती हैं; जिनके नाम क्रमश: इसप्रकार हैं –

१. क्षयोपशमलब्धि, २. विशुद्धिलब्धि, ३. देशनालब्धि, ४. प्रायोग्यलब्धि और ५. करणलब्धि।

यद्यपि इनकी चर्चा इसी प्रकरण में आगे आनेवाली है; तथापि उक्त वाक्यखण्ड में भी उनके स्पष्ट संकेत हैं। **मंदकषायादिक का कारण पाकर आत्मा को समझनेयोग्य ज्ञान का उघाड़ होना ही क्षयोपशमलब्धि है, मोह का मंद होना ही विशुद्धिलब्धि है और सच्चे देव-शास्त्र-गुरु का सत्समागम होना, उनके उपदेश का लाभ होना ही देशनालब्धि है।**

**क्षयोपशमलब्धि से तत्त्वविचार करने की शक्ति हुई, मोह के मंद होने से तत्त्वविचार करने का उद्यम हुआ और देव-शास्त्र-गुरु के सत्समागम से देशनालब्धि का लाभ मिला।**

उक्त परिस्थिति में १. रत्नत्रयरूप मोक्षमार्ग, २. देव–गुरु–धर्म, ३. जीवादि तत्त्व, ४. निज व पर और ५. हितकारी–अहितकारी भावों के उपदेश का लाभ मिला।

उक्त महत्त्वपूर्ण पाँच विषय एकप्रकार से सम्यग्दर्शन की प्राप्ति के पूर्व का पाठ्यक्रम (सिलेबस) है। सम्यग्दर्शन की प्राप्ति के पूर्व उक्त पाँच विषयों की जानकारी अवश्य होना चाहिए। न केवल सामान्य जानकारी अपितु इनका ज्ञान होने पर यदि इसप्रकार के भाव आते हैं कि –

***''अहो ! मुझे तो इन बातों का पता ही नहीं था, मैं तो भ्रम से भूल कर प्राप्त पर्याय में ही मगन था, इस पर्याय का काल तो अत्यल्प है और यहाँ मुझे सब प्रकार की अनुकूलता है; अत: मुझे इन बातों के बारे में ठीक से निर्णय करना चाहिए; क्योंकि इसमें तो मेरा ही भला प्रतीत होता है, किसी अन्य का कोई स्वार्थ हो – ऐसा लगता ही नहीं है।''***

तो समझना चाहिए कि गाड़ी लाइन पर चल रही है।

इसप्रकार विचार आवे तो फिर जो कुछ भी सुना–समझा है, उसके बारे में निर्णय करने के पुरुषार्थ में जुट जाना चाहिए।

सबसे पहले तो जिनागम के उपदेश के अनुसार इनके नाम सीखे, उनके लक्षणों को समझे, उन्हें अच्छी तरह याद कर ले, धारणा में ले ले; फिर विवेकपूर्वक विचार कर अनेकप्रकार से परीक्षा करें। स्वरूप स्पष्ट न हो तो विशेषज्ञों से समझे, साधर्मियों से चर्चा करे, चर्चाओं में समागत विषय पर गंभीर चिन्तन करे। इसप्रकार तबतक करता रहे, जबतक आगमानुसार सही निर्णय पर न पहुँचे।

'इसप्रकार प्रयास कबतक करना चाहिए ?' – इसप्रकार का प्रश्न उपस्थित होने पर आचार्यकल्प पण्डित टोडरमलजी लिखते हैं –

**''इसप्रकार इस जानने के अर्थ कभी स्वयं ही विचार करता है, कभी शास्त्र पढता है, कभी सुनता है, कभी अभ्यास करता है, कभी प्रश्नोत्तर करता है – इत्यादिरूप प्रवर्तता है। अपना कार्य करने का इसको हर्ष बहुत है, इसलिए अंतरंग प्रीति से उसका साधन करता है। इसप्रकार साधन करते हुए जबतक (१) सच्चा तत्त्वश्रद्धान न हो, (२) 'यह इसीप्रकार है' – ऐसी प्रतीति सहित जीवादि तत्त्वों का स्वरूप आपको भासित न हो, (३) जैसे पर्याय में अहंबुद्धि है, वैसे केवल आत्मा में अहंबुद्धि न आये, (४) हित–अहितरूप अपने भावों को न पहिचाने – तबतक सम्यक्त्व के सन्मुख मिथ्यादृष्टि है।**

**यह जीव थोड़े ही काल में सम्यक्त्व को प्राप्त होगा; इसी भव में या अन्य पर्याय में सम्यक्त्व को प्राप्त करेगा।[१]''**

विशेष कर अध्यात्म शास्त्रों का श्रवण, अध्ययन, मनन, पठन–पाठन, चर्चा करना और पाठ करना – ये सभी तत्त्वविचार में ही आते हैं; इसलिए उक्त कार्यों के माध्यम से तत्त्वविचार करने का काम तबतक करते रहना चाहिए; जबतक आत्मा में अहंबुद्धि न आवे और आत्मानुभव न हो जावे।

थोड़े काल का अर्थ पण्डितजी स्वयं स्पष्ट कर देते हैं कि रुचिपूर्वक तत्त्वाभ्यास करनेवालों को इसी भव में या अगले भव में सम्यक्त्व की प्राप्ति हो जावेगी। तात्पर्य यह है कि हमारा एकमात्र कर्तव्य यह है कि हम सभी को जीवन पर्यन्त तत्त्वाभ्यास करते रहना चाहिए; क्योंकि सम्यक्त्व प्राप्ति का बुद्धिपूर्वक किया जानेवाला पुरुषार्थ तो एकमात्र तत्त्वाभ्यास ही है।

**(क्रमश:)**

१. मोक्षमार्गप्रकाशक, सातवाँ अधिकार, पृष्ठ २५७

१. मोक्षमार्गप्रकाशक, सातवाँ अधिकार, पृष्ठ २६०

17 जून 2011, मूल्य : 2/- आर. एन. आई. 31109/77 RJ / J. P. C / FN-61 / 2009-11

## आध्यात्मिक तत्त्व संगोष्ठी संपन्न

**सोनागिर (म.प्र.) :** यहाँ आचार्य कुन्दकुन्द कहान आगम जिनमंदिर के भव्य हॉल में दिनांक 3 से 7 अप्रैल 2011 तक ब्र. रवीन्द्रजी 'आत्मन' के मंगल सानिध्य में पंच दिवसीय आध्यात्मिक तत्त्व संगोष्ठी का आयोजन संपन्न हुआ, जिसमें ब्र. रवीन्द्रजी द्वारा प्रात: एवं दोपहर नियमसार की गाथा 43 पर मार्मिक प्रवचनों का लाभ मिला।

इस अवसर पर गुरुदेवश्री के सी.डी. प्रवचनों के अतिरिक्त पण्डित ज्ञानचंदजी विदिशा, पण्डित राजेन्द्रकुमारजी जबलपुर, पण्डित जवाहरलालजी बड़कुल विदिशा, ब्र. कैलाशचंदजी 'अचल' ललितपुर, पण्डित मांगीलालजी कोलारस, पण्डित श्रेणिकजी जबलपुर, पण्डित लालजीरामजी विदिशा, पण्डित सुरेशचंदजी टीकमगढ, डॉ. विनोदजी शास्त्री 'चिन्मय' विदिशा, पण्डित मनोजजी, पण्डित नन्हे भैया, डॉ. मुकेशजी शास्त्री 'तन्मय' विदिशा, पण्डित मधुकरजी जलगांव, पण्डित गुलाबचंदजी बीना, श्री अमित भैया विदिशा, श्री केशरीमलजी पाटनी, श्री पूरनचंद्रजी आदि अनेक विद्वानों का लाभ प्राप्त हुआ।

गोष्ठी में मध्यप्रदेश, उत्तरप्रदेश, राजस्थान, महाराष्ट्र, दिल्ली, मुम्बई, कोलकाता आदि नगरों से 500 से अधिक साधर्मियों ने धर्मलाभ लिया।

## शाकाहार की अपील की

**मुम्बई :** यहाँ फ्लोरा फाउन्टेन सर्कल पर दिनांक 14 जून को गैर सरकारी संस्था पीपल फॉर एनिमल लिबरेशन (पाल) ने शाकाहार अपनाकर अनैतिक आचरण से दूर रहने का सन्देश 7.5 फीट के चिकन पुतले के माध्यम से दिया।

पाल के कार्यकर्त्ता 'मैं भी जीव हूँ', 'मुझे मत खाओ', 'मुझे भी जीने का अधिकार है' जैसे स्लोगन लेकर शाकाहारी बनने की प्रेरणा दे रहे थे।

इस प्रकार के कार्यक्रमों द्वारा पाल देशभर में शाकाहार के समर्थकों के साथ मिलकर मांसाहार त्यागने और जीवदया के क्षेत्र में सक्रिय भूमिका निभा रहा है। **– सर्वज्ञ भारिल्ल, जयपुर**

## आगामी कार्यक्रम...

**1.** नागपुर में दिनांक 3 जुलाई को 'महिला वात्सल्य सम्मेलन' की श्रृंखला में विशेष कार्यक्रम आयोजित किया जायेगा।

**2.** सोनागिरजी में दिनांक 22 से 24 जुलाई तक श्री भक्तामर महामण्डल विधान का आयोजन श्री परमागम मंदिर में संपन्न होगा।

**3.** देवलाली-नासिक (महा.) में अष्टाह्निका में दिनांक 8 से 15 जुलाई तक 'श्री समयसार महामण्डल विधान' का आयोजन होगा।

## उपकार दिवस मनाया

**नागपुर (महा.) :** यहाँ मुमुक्षु मण्डल एवं अ.भा.जैन युवा/महिला फैडरेशन के तत्त्वावधान में गुरुदेवश्री कानजीस्वामी की 112वीं जन्मजयन्ती दिनांक 5 व 6 मई को दो दिन तक उपकार दिवस के रूप में मनाई गई।

इस अवसर पर डॉ. राकेशजी शास्त्री एवं पण्डित विपिनजी शास्त्री के सानिध्य में 34 वक्ताओं ने अपने विचार व्यक्त किये।

दिनांक 6 मई को अक्षय तृतीया पर्व के अवसर पर तीर्थंकर ऋषभदेव के उपकार स्वरूप पाठशाला के बालकों द्वारा सांस्कृतिक कार्यक्रम किया गया।

**अहिंसा एवं शाकाहार रथ का समापन दिनांक 12 जून को कोटा में बड़ी धूमधाम से किया गया। रथ यात्रा पूरे राजस्थान प्रदेश में 29 मई से 12 जून तक गांव-गांव व शहर-शहर में गई, जिसका जगह-जगह पर भव्य स्वागत हुआ। इसके विस्तृत समाचार आगामी अंक में प्रकाशित किये जायेंगे।**

**दिनांक 31 जुलाई से 9 अगस्त, 2011 तक श्री टोडरमल स्मारक भवन, जयपुर में आध्यात्मिक शिक्षण शिविर का आयोजन निश्चित है, किसी भी दुष्प्रचार से भ्रमित न हों। यदि आपके नगर में शिविर नहीं लगने संबंधी कोई अफवाह फैला रहा हो तो 09785643202 मो.नं. पर संपर्क करें।**

**पूज्य गुरुदेवश्री कानजीस्वामी के समस्त ऑडियो - वीडियो प्रवचन साहित्य एवं अन्य अनेक जानकारियों के लिये अवश्य देखें-**
**वेबसाईट - www.vitragvani.com**
**संपर्क सूत्र-श्री कुन्दकुन्द कहान पारमार्थिक ट्रस्ट, मुम्बई**
**Ph. : 022-26130820, 26104912, E-Mail - info@vitragvani.com**

**प्रकाशन तिथि : 13 जून 2011**

**प्रति,**

सम्पादक : **पण्डित रतनचन्द भारिल्ल** शास्त्री, न्यायतीर्थ, साहित्यरत्न, एम.ए., बी.एड.
सह-सम्पादक : **पण्डित संजीवकुमार गोधा**, डबल एम.ए.(जैनविद्या व तुलनात्मक धर्मदर्शन; इतिहास), नेट, एम.फिल (जैन दर्शन)
प्रकाशक एवं मुद्रक : **ब्र. यशपाल जैन** द्वारा जैनपथप्रदर्शक समिति के लिए जयपुर प्रिण्टर्स प्रा.लि., जयपुर से मुद्रित तथा त्रिमूर्ति कम्प्यूटर्स, श्री टोडरमल स्मारक भवन, ए-४, बापूनगर, जयपुर से प्रकाशित।

*यदि न पहुँचे तो निम्न पते पर भेजें -*
ए- 4 बापूनगर, जयपुर - 302015 (राज.)
**फोन :** (0141) 2705581, 2707458
**E-Mail :** ptstjaipur@yahoo.com **फैक्स :** (0141) 2704127